महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र

एम. एच. डी.

एम. ए. हिन्दी

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य

2011—12

एम.एच.डी.-1	:	हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी.-5	:	साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी.-7	:	हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी.-13	:	उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी.-14	:	हिंदी उपन्यास - 1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी.-15	:	हिंदी उपन्यास-2
एम.एच.डी.-16	:	भारतीय उपन्यास

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित)

निदेशक, महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केन्द्र
पोस्ट - हिन्दी विश्वविद्यालय, गांधी हिल, उमरी, वर्धा - 442005 (महाराष्ट्र)
फोन/फैक्स नं. : 07152-247146
वेब साईटः www.hindivishwa.org

सत्रीय कार्य 2011-12

(Assignment 2011-12)

पाठ्यक्रम कोड : एम. एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओं

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यो की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित सातों पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं।

एम.एच.डी.-1	:	हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी.-5	:	साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी.-7	:	हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान
एम.एच.डी.-13	:	उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी.-14	:	हिंदी उपन्यास - 1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी.-15	:	हिंदी उपन्यास-2
एम.एच.डी.-16	:	भारतीय उपन्यास

एम.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4-4 क्रेडिट के है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए है। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडो में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक अलेखो के संग्रह भेजे गए है। एम.एच.डी.-1 में 'विविधा' नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तको तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्‌देश्य : सत्रीय कार्य का उद्‌देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यो का उद्‌देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण

विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचार कर अपने शब्दों में लिखे। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार-व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाई और पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र (यदि लागू हों) का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध है।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : --

नाम : --

पता : --

दिनांक : ------------------

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : -----------------------------

सत्रीय कार्य कोड : ----------------------------------

अध्ययन केंद्र का नाम/कोड (यदि लागू हो) : -------------------------------------

----

3. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप (A4) के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
5. अपनी लिखावट में उत्तर दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें। आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
2. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते है।
3. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

अमरेन्द्र कुमार शर्मा
(पाठ्यक्रम संयोजक)

<u>सत्रीय कार्य भेजने का पता :</u>

निदेशक, महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केन्द्र,
पोस्ट - हिन्दी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442005
महाराष्ट्र (फोन/फैक्स नं. : 07152-247146,

सत्रीय कार्य की अंतिम तिथि .*30 अप्रैल 2012*

एम.ए. हिन्दी कार्यक्रम

हिन्दी काव्य - 1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 1
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-1/2011-12

कुल अंक - 100

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए।

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) मोको कहाँ ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में,
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना कावे कैलास में,
ना तो कौने क्रियाकर्म में, नहीं योग बैराग में,
खोजी होय तो तुरते मिलिहौं, पलभर की तालास में,
कहै कबीर सुनोभाई साधो, सब स्वाँसों की स्वांस में,

(ख) भाई सांवरे रंग राची,
सज सिंगार बांध पग घूंघर, लोकलाज तज नाची,
गया कुमत लयां साधों संगत श्याम प्रीत जग सांची।

(ग) सगुनहि अगुनहि नहि कुछ भेदा। गावहि मुनि पुरान बुध बेदा।
अगुन अरूप अनख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।
जो गुन रहित सगुन सोई कैसे। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे।

(घ) अति सूधों सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलें तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसांस नहीं।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक ते दूसरी आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े है कहो मन लेहू पै देहू छहाँक नहीं।

2. विद्यापति की कविताई का समाज क्या है। विवेचन कीजिए।

3. निर्गुण परंपरा में कबीर की कविता का महत्व निरूपति करें।

4. जायसी की कविता का वैशिष्ट्य पर प्रकाश ड़ालें।

5. स्त्री-मुक्ति के संदर्भ में मीरा की कविता का मूल्यांकन करें।

6. तुलसीदास की कविता के निकष क्या हैं। आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत करें।

7. टिप्पणी लिखें -

(क) सूरदास की कृष्ण - भक्ति

(ख) पद्माकर की कविता

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 05
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-5/2011-12

कुल अंक 100

किन्ही पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 800 शब्दों में दे।

1. साहित्य की अवधारणा में शब्द-शक्ति की विवेचना कीजिए।

2. रस-चिंतन में रस निष्पति की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए।

3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा में मैथ्यू आर्नल्ड के योगदान का निरूपण कीजिए।

4. नयी समीक्षा क्या है। विश्लेषण कीजिए।

5. साहित्य में मार्क्सवादी आलोचना की परंपरा का उल्लेख करें।

6. टी.एस. इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।

7. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

(क) अस्तित्ववाद

(ख) कॉलरिज

हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 7
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-7/2011-12

कुल अंक 100

किन्ही पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 800 शब्दों में दे।

1. भाषा की संप्रेषणीयता के समस्त अवयवों की व्याख्या कीजिए।

2. समाज विशेष की अन्‍र्तदशाओं से भाषा का निर्माण और विकास होता है। समीक्षा कीजिए।

3. हिंदी संरचना में ध्वनि संरचना को सोदाहरण समझाएँ।

4. भाषा संबंधी चॉमस्की के चिंतन के मूल सिद्धान्तों का परिचय दें।

5. शैली विज्ञान के मुख्य तत्वों का परिचयात्मक विश्लेषण करें।

6. संपर्क भाषा की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए उसके महत्व का उल्लेख करें।

7. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

(क) प्रोक्ति

(ख) हिंदी भाषा क्षेत्र

उपन्यास : स्वरूप और विकास

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 13
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-13/2011-12

कुल अंक 100

किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दे।

1. उपन्यास के उदय की उदाहरण सहित सविस्तार चर्चा करें।

2. उपन्यास की विभिन्न आलोचना दृष्टियों की व्याख्या करें।

3. किसी उपन्यास के आधार पर उसकी भाषिक संरचना का सोदाहरण विश्लेषण करें।

4. विश्व युद्धों की पृष्ठभूमि में उपन्यासों पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करें।

5. आजादी के बाद प्रकाशित किसी उपन्यास के आधार पर उपन्यास की भारतीयता का विश्लेषण करें।

6. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास की भूमिका का विश्लेषण करें।

7. **टिप्पणी करें।**

   (क) उपन्यास में मिथक

   (ख) उपन्यास और आत्मकथा

हिन्दी उपन्यास - 1

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 14
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-14/2011-12

कुल अंक 100

किन्ही पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दें।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

(क) कोई कुप्रथा उपेक्षा या निर्दयता से नहीं मिटती। उसका नाश शिक्षा, ज्ञान और दया से होता है। स्वर्ग में पहुंचने के लिए कोई सीधा रास्ता नहीं है। वैतरणी का सामाना अवश्य करना पड़ेगा। जो लोग समझते हैं कि वह किसी महात्मा के अर्शीवाद से कूदकर स्वर्ग में जा बैठेगें, वह उनसे अधिक हास्यापद नहीं, जो समझते हैं कि चौक से वेश्याओं को निकाल देने से भारत के सब दुख-दारिद्रय मिट जायेगें और चौक से नवीन सूर्य का उदय हो जायेगा।

(ख) स्त्री अपनी कुप्रवृति का दोष सदैव पुरूष के सिर पर रखती है, अपने को वह दलित और आहत समझती है। गायत्री के हृदय में इस समय ज्ञानशंकर का प्रेमालाप, वह मृदुल व्यवहार, वह सतृष्ण चितवनें तीर की तरह लग रही थीं।

(ग) नीतिज्ञ के लिए अपना लक्ष्य ही सबकुछ है, आत्मा का उसके सामने कुछ मूल्य नहीं। गौरव-संपन्न प्राणियों के लिए अपना चरित्र-बल ही सर्वप्रधान है। वे अपने चरित्र पर किए गए आघातों को सह नहीं सकते। वे अपनी निर्दोषता सिद्ध करने को अपने लक्ष्य की प्राप्ति से कही अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं।

(घ) स्त्रियों को कैद में, परदे में, या पुरूषों से कोसो दूर रखने का तात्पर्य यही निकलता है कि आपके यहाँ जनता इतनी आचार-भ्रष्ट है कि स्त्रियों का अपमान करने में जरा भी संकोच नहीं करती। युवकों के लिए राजनीति, धर्म, ललित-कला, साहित्य, दर्शन, इतिहास, विज्ञान और हजारों ही ऐसे विषय हैं, जिनके आधार पर वे युवतियों से गहरी दोस्ती पैदा कर सकते है।

2. हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द के अवदान का विश्लेषण करें।

3. प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण किस प्रकार हुआ है। उदाहरणों सहित विश्लेषण करें।

4. सेवासदन के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों और समस्याओं का मूल्यांकन करें।

5. प्रेमाश्रम के औपन्यासिक शिल्प का विश्लेषण करें।

6. औद्योगीकरण की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में रंगभूमि की विवेचना करें।

7. व्याख्या करें।

(क) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

(ख) गबन के स्त्री पात्र की चिंताएँ

हिन्दी उपन्यास - 2

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 15
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-15/2011-12

कुल अंक 100

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दे।

1. निम्नलिखित गद्यांशों मे से किन्ही दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) आप आज के विज्ञान और साइंस से खुदा के सम्बन्ध में तर्क नहीं कर सकते क्योंकि जिस वक्त मुहम्मद साहब पर इस्लाम का इलहाम नाजल हुआ था, वह विज्ञान मौजूद नहीं था।

(ख) ख्वाब में मुल्क को आबाद वही देखता है जो लोगों के लिए दिल गुलजार रखता है। जुल्म से खराब-बदनामी होती है। जुल्म के जरिए रियाया को तबाह करना ठीक नहीं। इसलिए कि वही हकूमत को पनाह देनेवाली है।

(ग) काल बली है। उस पर किसका बस चलता है। पड़ोसियों के बहुत समझने पर जमुना ने आँसू पोंछे। घर-बार सँभाला। इतनी बड़ी कोठी थी, अकेले रहना एक विधवा महिला के लिए अनुचित था, अतः उसने रामधन को एक कोठरी दी और पवित्रता से जीवन व्यतीत करने लगी।

(घ) अब हम गुटबन्दी को तू-तू, मैं-मैं, लात-जूता साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदान्त को जन्म देनेवाले देश की उपलब्धि है। यही, संक्षेप में, गुटबन्दी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।

2. अपने समय की प्रमाणिक अभिव्यक्ति है, 'झूठा-सच'। कथन की समीक्षा करें।

3. 'जिन्दगीनामा' के कथा और भाषा शिल्प का विश्लेषण करें।

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' हिन्दी कथा साहित्य में एक नया प्रयोग है, विश्लेषण करें।

5. शिक्षा संस्था की आलोचना के संदर्भ से 'राग-दरबारी' का विश्लेषण करें।

6. 'झूठा-सच' की ऐतिहासिकता का मूल्यांकन करें।

7. टिप्पणी करें।

(क) यशपाल और मार्क्सवाद

(ख) लंगड़

भारतीय उपन्यास

पाठ्यक्रम कोड - एम.एच.डी. 16
सत्रीय कार्य कोड - एमएचडी-16/2011-12

कुल अंक 100

निम्नलिखित प्रश्नों में से पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।

1. 'चेम्मीन' के संदर्भ से समुद्रीय-परिवेश की रूपरेखा स्पष्ट करें।

2. ब्राह्मण व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में 'संस्कार' का मूल्यांकन करें।

3. गुजराती उपन्यास की परंपरा में 'मानवीनी भवाई' उपन्यास की महत्ता का उल्लेख करें।

4. पन्नालाल पटेल की रचनाशीलता के प्रमुख प्रतिपाद्य का उल्लेख करें।

5. बांग्ला उपन्यास में महाश्वेता देवी का क्या स्थान है, उल्लेख करें।

6. 'जंगल के दावेदार' के कथानक की विशिष्टता का मूल्यांकन करें।

7. टिप्पणी करें।

(क) चेम्मीन का मिथ

(ख) संस्कार की स्त्री